पल्लवी प्रकाशन

नढ़िया भुकैए हमर घराड़ीपर

(गजल संग्रह)

जगदानन्द झा 'मनु'

नढ़िया भुकैए हमर घराड़ीपर

नढ़िया भुकैए हमर घराड़ीपर

जगदानन्द झा 'मनु'

पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

Nadhiya Bhukaiye Hamar Ghararepar

Anthology of Maithili Gazal by Sh. Jagdanand Jha 'Manu'

ISBN: 978-93-93135-18-6
दाम: 200/- (भा.रु.)

पहिल संस्करण: 2022
दोसर संस्करण: 2023

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

समर्पण

ई गजल संग्रह 'नढ़िया भुकैए हमर घराड़ीपर'
सादर समर्पित अछि हुनक सबहक श्रीचरण कमलमे
जे अपन माटि पानिसँ दूर होएबाक बिछोह
अपन करेजमे समटने छथि।

दू आखर

आदरणीय रसिकजन सादर प्रणाम। अपनेक हाथमे ई पोथी अछि, हमरा हेतु ई हर्खक गप्प अछि। नीक बेजाए केहेन से तँ आब अपने लोकनि कहब। जेनाकी अपने सभ जनैत छी गजल मने प्रेम, प्रेम मने जीवन, आ एहिठाम हमर प्रेम अर्थात हमर जीवन मिथिलाक माटि पानिसँ अछि। एहि संग्रहमे हम मिथिलाक माटि पानिसँ सरोकार रखैत विषयबस्तु परसने छी। समाजक स्थिति देखाबैक प्रयास केने छी। कोनो रचनासँ जँ किनको मोनकेँ ठेस पहुँचनि तँ हम क्षमाप्राथी छी अन्यथा नहि लेब, ई मात्र संजोग अछि।

हम गजलक ओस्ताज नहि, मात्र एकटा विद्यार्धि छी। गजल व्याकरणक वा गजल नियमाबलीक पूर्ण एवं शुद्ध ज्ञान सिखैक इच्छुक, विद्यार्धि, शोधकर्ता आ रसिकजनसँ आग्रह जे ओ सभ अनचिन्हार आखर (http://anchinharakharkolkata.blogspot.com) ब्लॉगक अध्ययन आ मनन करथि। हम अपन अपूर्ण गजलक ज्ञान संगे अपनेक समक्ष उपस्थित छी तँए एहि संग्रहमे बहुत रास वार्णिक आ व्याकरण सम्बन्धित दोख भऽ सकैए। आशा अछि अपने सभ कोनो तरहक गलती लेल अज्ञानी जानि क्षमा करैत हमरा सूचित करब जाहिसँ हम अपन अज्ञानताकेँ दूर कए आगूसँ अपनेक सेवामे आओर शुद्ध आ नीक गजल प्रस्तुत कय सकी।

हमर साहित्यक बएस कोनो बेसी नहि भेलए। विद्यार्थी जीवनमे

कविता लेखनमे रूचि छल मुदा गृहस्थ जीवनमे सभटा बिसरा गेलहुँ। इसा सन 2010, श्री गजेन्द्र ठाकुरजी फेसबुककेँ विदेह ग्रुपसँ जोड़लनि आ ओतएसँ हमर साहित्यक जीवन शुरू भेल। विदेहपर सभकेँ नीक-नीक लिखैत देख कए हमरो भितरक मरल साहित्यक सिनेह बाहर निकलल, दू-तीनटा कविता लिख विदेहक देबाल पर देलियै। पाठकक वाह-वाही पढ़ि नीक लागल। आगू लिखैक प्रेरणा भेटल। संगे अपन कविताकेँ विदेह ई-पत्रपर छपल देख आओर खुशी भेटल। मुदा हमर मैथिली भाषाक पक्ष बड्ड कमजोर छल, एखनो अछिए। इसा सन 2011 मे गुरुबर आशीष अनचिन्हारजी विदेह ग्रुपकेँ आशीर्वादे भेँट भेलाह आ ओहिठामसँ हुनक मार्गदर्शनमे शुरू भेल हमर गजल आ मैथिली लिखैक यात्रा। ओकर बादक सभ किछु अपने लोकनिक समक्ष अछि। हमर जीवनमे साहित्यक कोनो जगह अछि तँ ओहि लेल हम आभारी छी मार्गदर्शक श्री गजेन्द्र ठाकुर जीकँ, गुरुबर श्री आशीष जीकँ, साहित्यिक मित्रमंडलीक संगे-संग सगरो पाठक लोकनिक जिनक मार्गदर्शन आ प्रेरणाक बलसँ अर्जित पूजीकेँ हम एहिठाम परसने छी। एहि संग्रहक ई-बूक इसा सन 2014 सँ इन्टरनेटपर उपलब्ध अछि, पोथी रूपमे अबैत अबैत बिल्लम भेल ताहि लेल हम क्षमाप्रार्थी छी।

अपनेक सिनेहक आशमे

जगदानन्द झा 'मनु'

ई-मेल : *jagdanandjha@gmail.com*

अनुक्रम-

गजल- 1

ससिनेह संग्रह अहाँक हाथमे पसरल जे
अहाँक लेल परसलहुँ मोनमे निखरल जे

सिनेह हमर सभटा मिथिलाक माटि पानिसँ
करेजासँ निकलि कऽ कागजपर उतरल जे

नै ज्ञान बुद्धि नै साहित्य केर शिक्षा किछु पेलहुँ
ई सभ आशीष गुरुवरकेँ अछि चतरल जे

हमर अल्प ज्ञानसँ परिचय अहाँ कराएब
प्रिय पाठक अपने पढ़ि गलती पकड़ल जे

समेटत 'मनु' एक एक अनमोल सिनेहकेँ
हमर प्रति करेजासँ अपनेक झहरल जे ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-18)

गजल- 2

ज्ञानी नहि हम किछु जानी नहि
अल्प बुद्धि कनिको धियानी नहि

हम छी मैथिल मिथिला हमर
मिथिला छोरि क' किछु मानी नहि

इतिहास भूगोलसँ अनभिक
राजनीति तँ कनिको तानी नहि

कविता-गजल कए ज्ञान नहि
गद्य-पद्य विधा किछु छानी नहि

करेज खोलि कागजपर धेने
'मनु' लेखन कलाकेँ ज्ञानी नहि ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण - 12)

गजल- 3

भाइ आब हमहूँ लिखब अपन फूटल कपारपर
जेना ई भात-दालि तीमन ओकर उपर अचारपर

सोन सनक घर-आँगन स्वर्ग सन हमर परिवार
छोड़ि एलहुँ देश अपन दू-चारि टकाक बेपारपर

कनिको आटा नहि एगो जाँता नहि करछु कराही नहि
नून-मिरचाइ आनि लेलहुँ सभटा पैंच-उधारपर

चिन्हलक नै केओ नै बुझलक टुगर बनि रहलहुँ
गेलहुँ ई अपन माटि-पानि छोड़ि दोसरक द्वारपर

हम कमेलौं घर ओ भरलक हमर खोपरी खालिए
आब बैसल ‘मनु’ कनैए बरखामे चुबैत चारपर ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-21)

गजल- 4

नढ़िया भुकैए हमर घराड़ीपर
कुकुर सुतैए हमर दुआरीपर

गामक पनिगर भात छोड़ि कऽ एलौं
छी पेट पोसने मासक उधारीपर

जे किछु कमेलौं हाथ-पएर तोड़ि कऽ
साँझे राति खर्च भेल छुच्छे ताड़ीपर

बचेलौं बर्ख भरि पेट काटि-काटि कऽ
गमेलौं गाम जे आबक सबारीपर

छोरु आनक आशा अप्पन बसाऊ यौ
घुरि आउ 'मनु' सोनसन बाड़ीपर ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-14)

गजल- 5

किस्त-किस्तमे जिनगी बिताबै लेल मजबूर छी
माटि पानि छोड़ि अपन किएक एतेक दूर छी

आबै जाइ जाउ घुरि-घुरि अप्पन-अप्पन घर
घरमे रोटी नै रखने माछ-भात भरपूर छी

तीमन-तरकारी बेच-बेच करु नै गुजारा यौ
घुरि आऊ अप्पन गाम एतुका अहाँ हजूर छी

परदेशमे कतेक दिन रहब बनि पड़बा
अप्पन घर आऊ एतएकेँ अहाँ तँ गरूड़ छी

अपन लोकक मन-मनमे ‘मनु’ अहाँ बसुयौ
परक द्वारिपर बनल किएक मजदूर छी ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-18)

गजल- 6

सोना भसल जाइए जुनि काँटीकेँ पकरू
छोड़ि अपन भाषा नहि खराँटीकेँ पकरू

दोसर घर धेने भेटत नहि ओ सिनेह
छोरि आनक बोझ अपन आँटीकेँ पकरू

आदिकालसँ अपन शिक्षा लेने विश्व अछि
दोसरकेँ देखाँसुमे नहि छाँटीकेँ पकरू

संपन्न हमर संस्कृति मधुर भाषा अछि
लात मारि टल्हाकेँ अपन खाँटीकेँ पकरू

छोरि दिल्ली मुंबई घुरि आऊ अप्पन घर
आब दरभंगा मधुबनी राँटीकेँ पकरू ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-16)

गजल- 7

बाबा पोखरिकेँ रौहक की कही
बहुत कचोटैए गामक दही

अशोक ठाढ़िसँ कूदि पोखरिमे
जाइठ छुबि कोना पानिमे लही

बनसी बनाबी कोना नुका कए
पूल्ली बनाबै लेल काटी खरही

छीन कऽ नानी हाथक मटकुरी
छोट-छोट हाथसँ छाल्ही मही

जखन अबैत गामक इआद
कनि-कनि कऽ हम नोरेमे बही

सभ सुख रहितो परदेशमे
माटिक बिछोह कते हम सही

मैरतो 'मनु' सभ सुख छोरि कऽ
मिथिलाक माटिपर हम रही ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-12)

गजल- 8

नहि हम कागजक आखर जनि पएलहुँ
नहि केकरो करेजमे हम सनि पएलहुँ

आब के पतियाएत हमर मोनकेँ कनिको
हम तँ नहि केकरो अपन बनि पएलहुँ

बिन पानिक गति जेना माछक होएत छैक
ओहे गति हमर हम नहि कनि पएलहुँ

अप्पन घर छोड़ि कऽ परदेश जा बसलहुँ
सुन्नर यादि छोड़ि नहि किछु अनि पएलहुँ

बरख-बरख हम रहलहुँ परदेशमे
ओकरा तँ 'मनु' अपन नहि मनि पएलहुँ ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-17)

गजल- 9

जाति पातिपर आब हम नहि लड़ब यौ
हम मैथिलपुत्र मिल कऽ आगू बढ़ब यौ

अपन माटि पानिपर आब जीयब हम
प्राण अप्पन छोरब वचन नै तोरब यौ

बाहर बहुत छैक दूध मलाइ राखल
मड़ुआ रोटी नून लेल सभटा छोरब यौ

खून पसीनासँ अप्पन धरती पटाएब
मेहनतसँ सोना उपजा कए रहब यौ

बिसरल मान सम्मान फेरसँ जगाएब
दुनिआक नक्शामे 'मनु' फेरसँ उठब यौ ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-16)

गजल- 10

बुझलक नेता ई जनता पाकल अछि
आम जनता तँ सदिखन भागल अछि

बचल छै गाममे बूढ़ पुरान आ बच्चा
कबिलाहा सभ प्रदेशमे पागल अछि

खेत बनल छै परती घर सुनसान
सुतैत पिचपर सभ अभागल अछि

पिया विरहमे वौराएल नब कनियाँ
कनि कनि सगरो देह सुखायल अछि

जागू जनता जनार्दन आबो हक बुझू
भगाबू ओकरा जे नेता बिकायल अछि ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-15)

गजल- 11

हमर कमाइ कोन कोनामे परल अछि
मंत्री घरमे बैमानीक सोना गरल अछि

गरीब बनि गेल आइ जब्बहकेँ बकरी
चिकबा धनिकाहा गामे गाम फरल अछि

डाका परै परोसमे जँ सुतलौं निचैनसँ
ई निश्चय बुझू आत्मा हमर मरल अछि

ढोंगी भक्तकेँ नहि निकलै रुपैया दानमे
भरि थारी लेने खंड माछक तरल अछि

शहर नहि ‘मनु’ गाम गामकेँ चौकपर
मनुक्खसँ सजि शराबखाना भरल अछि ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-16)

गजल- 12

(मिथिला राज अभियानमे सर्मपित शहीद सभकेँ श्रधा सुमन -)

खूनसँ भिजलै धरती मिथला बनबे करतै
आब जोड़ लगाबए कियो झंडा गरबे करतै

सुनू बलिदानी सुनू सेनानी आब दिन दूर नै
विश्वक नक्शामे मिथिला राज चमकबे करतै

कतबो चलतै बम निकलै चाहे हमर दम
क्रांति बढ़ल आगू आब जुनि ई रुकबे करतै

बहुत सहलहुँ सभ सहबै नै आब ककरो
सोनितक हिलकोरसँ दुश्मन मरबे करतै

एक खूनक बूंदसँ सए-सए 'मनु' जन्म लेतै
अपन अधिकार लेबै लेल ओ लड़बे करतै ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-18)

गजल- 13

हम चान लेबैलए बढ़लौं अहाँ रोकब तैयो तारा लेबै
मैथिलकैँ बढ़ल डेग नहि रुकत आब जयकारा लेबै

मिथिलाराज मँगै छी हम भीखमे नहि अधिकार बूझि
चम्पारणसँ दुमका नहि देब किशनगंज तँ आरा लेबै

छोरलौं दिल्ली मुंबई अमृतसर सूरतकैँ बिसरै छी
अपन धरतीपर आबि नहि केकरो सहारा लेबै

गौरब हम जगाएब फेरसँ प्राचीन मिथिलाक शानकैँ
विश्व मंचपर एकबेर फेर पूर्ण मिथिलाक नारा लेबै

उठू 'मनु' जयकार करू अपन भीतर सिंघनाद करू
फेरसँ निश्चय कए सह सह अवतार बिषहारा लेबै ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-22)

गजल- 14

केहन-केहन दुनियाँ केहन-केहन भंग एकर
कियो हँसैए कियो कनैए कियो झूमैए संग एकर

कियो मरैए दूधक द्वारे कियो भाँगमे डूबल अछि
बुझि नहि पएलहुँ आइतक कनिको ढंग एकर

पथैत चिपरी लक्ष्मी देखलौं कुबेर चराबथि पाड़ी
गंगा-यमुना पानि भरैत की हमहूँ छी अंग एकर

भोट माँगै पोहला पोहला कऽ गदहोकेँ बाप बना कऽ
जीतैत देखू गिरगिट जकाँ बदलैत रंग एकर

'मनु' छल कारीझाम चिन्हार बनोलन्हि अनचिन्हार
घड़ी-घड़ीमे बदलैत देखू आब तँ उमंग एकर ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-20)

गजल- 15

भ्रष्टाचारकेँ ठेका आजुक सरकार लेने
कारी रुपैयाक करमान धर्माचार लेने

बोगला भगत छै बैसल घाट-घाटपर
खून पीबैक लेल तैयार हथियार लेने

कर्तव्य बिसरल अछि मीडिया समाजमे
नीक बेजाए छोरि कमाऊ समाचार लेने

प्रेमक संबंध बचल छैक पाइए धरि
पाइ अछि एक दोसरसँ सरोकार लेने

सुनलौं कोयला दलालीमे मुँह कारी हैछै
‘मनु’ सगरो कारी छैक मिथ्या प्रचार लेने ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण - 16)

गजल- 16

नीक नीक लोकक ई केहन काज अछि
बेटा बेचैत नै कनिको किए लाज अछि

मायाक महिमा सगरो पसरल अछि
जतए देखू आब रुपैयाक राज अछि

धर्म निकलैत अछि पाखण्डमे बोड़ि कऽ
नवका आइ केहन एकर शाज अछि

बैमानी शैतानी बिच्चेठाम पोसाइ छैक
शुद्धाक जीवनमे तँ खसल गाज अछि

अपन बड़ाईमे 'मनु' बुराई कहै छी
माथक बनल केहन नव ताज अछि ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण - 15)

गजल- 17

आइ काल्हि तँ राजनीतिक बाजार बहुत गर्म अछि
देखू नेता सभक हाल बनल कतेक बेशर्म अछि

चानन टिका लगा कए बनल बड़का-बड़का भक्त
नहि पुछू एहि संसारमे केने कतेक कुकर्म अछि

अछि जे कर्मयोद्धा धीर बीर ओ कतए बजैत अछि
चुप्प भऽ करैत सदिखन अपन-अपन कर्म अछि

भैय्यारी आ सद्भावना ई तँ सबसँ बड़का प्रेम अछि
जे लड़ाबए एक दोसरसँ ओ नहि कोनो धर्म अछि

हम छी मैथिल आन नै ‘मनु’ कोनो हमर धर्म अछि
सपनोमे जँ तियागी ई सभसँ बड़का अधर्म अछि ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-20)

गजल- 18

घर-घर रावण आइ बसल अछि
सौभाग्यक सीता कतए भसल अछि

करेजक सिनेहकेँ मोल रहल नै
सभक पिआर पाइमे फसल अछि

कर्तव्य बोध बिसरा गेल सभतरि
भ्रष्टाचारमे सभ कियो धसल अछि

बैमान बैसल अछि राजगद्दीपर
इमानक मीटर कते खसल अछि

देश समाज 'मनु' नहि कुशल आब
जमाए बनल आतंकी असल अछि ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-14)

गजल- 19

हाथीक दाँत देखाबैकेँ आर नुकाबैकेँ छै आर
नेताकेँ कहैक गप्प छै आर बनाबैकेँ छै आर

केलक भोज नै दालि बड्ड सुड़के ई बूझल
भोज करैक बात आरो छैक देखाबैकेँ छै आर

दोसरकेँ फटलमे टाँग सभ कियो अड़ाबै छै
फाटल अपन सार्बजनिक कराबैकेँ छै आर

सासुरकेँ मजा बहुते होइ छै सभकेँ बुझल
कनियाँ सन्ग सासुरमे मजा सुनाबैकेँ छै आर

भाइ धनक गौरब तँ गौरबे आन्हर रहै छै
मोट रुपैया जखन बाप जे पठाबैकेँ छै आर ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-18)

गजल- 20

हम बनि गेलहुँ आन्हर कन्हा राज करैत अछि
अज्ञानी बनि रहलहुँ भाग हमर जरैत अछि

के चलबैए गोली कएकर छाती छलनी होइए
सगरो देखू हाथ हमरे सभतरि लड़ैत अछि

बिनु अन्नकेँ सभतरि जनता भूखे सुतैत अछि
गोदाममे भरल अन्न एखनो खूब सड़ैत अछि

सभक घरमे ई हड़ हड़ खट खट हैते छैक
बेटी साउस कहियो नै पुतौह किए मरैत अछि

झूठ कहब झूठ सुनब सत्यसँ सभ भागि गेलै
सत्य कहक मोल 'मनु' गदहा बनि भरैत अछि ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-19)

गजल- 21

घर घरमे चक्कू पिजाबैत देखलौं
नेनार्कें तमाकूल चूनाबैत देखलौं

बेगरता निकालि कऽ आजुक घड़ीमे
नीक नीककेँ ठेँगा देखाबैत देखलौं

मोनक दोख मोनेमे नुका कऽ सभटा
कपटसँ करेज लगाबैत देखलौं

दियादक फसादमे अपने मोलमे
घरमे धीया पूता नुकाबैत देखलौं

पाइकेँ जमाना छै पाइकेँ हिसाबमे
पानिमे मनुक्खता डुबाबैत देखलौं

नै रहिगेल मोल प्रेम आ सिनेहक
प्रेमकेँ डबरामे बहाबैत देखलौं

'मनु' मन कोमल सहि नहि सकलौं
किए माएकेँ नोर खसाबैत देखलौं ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-14)

गजल- 22

कान नै अपन देखब कौआ खिहारब
कहु कहु कोना अहाँ मिथिला सुधारब

घोघ तर कनियाँ कोठी तरहक माछ
मोन होइतो कहु कियो कोना निघारब

लागल आगि जीवनक मिझाएब कोना
की जिनगी भरि खड़ेल खड़े पजारब

कहियो तँ बसब आ ककरो बसाएब
भटकैत सीथ कतेक आरो उजारब

पानि केखनो ‘मनु’ पियासलोकेँ पीयेब
की बनि बकलेल माटिपर टघारब ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-15)

गजल- 23

मनुक्खक एहि दुनियाँमे कोनो मोल नहि रहल
हमरा लेल केकरो लग दूटा बोल नहि रहल

बजाएब कतए ककरा सभटा साज टूटिगेल
छल एकटा फूटल ओहो आब ढोल नहि रहल

सभतरि घुमैत अछि मनुक्खक भेषमे हुड़ार
नुकाबै लेल ओकरा लग कोनो खोल नहि रहल

रातिक भोजन ओरिआनमे माएक मोन अधीर
छल हमर बाड़ीमे एकटा से ओल नहि रहल

हँसैत आ मुस्काइत रहए जतएकैँ सभलोक
मिथिलाक गाममे 'मनु' आब ओ टोल नहि रहल ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण - 19)

गजल- 24

सभकियो दुनियाँमे किएक आँखि चोराबै छैक
माँगि नहि लिए कियो तेँ सभकिछु नुकाबै छैक

गरीबी भेलैक बहुते केहन ई व्यबस्था छैक
गरीबी नहि सरकार गरीबेकेँ मेटाबै छैक

साउस भेली सरदार गलती नहि हुनकर
जतए ततए किएक पुतोहुकेँ जड़ाबै छैक

जतेक दर्द बेटामे बेटीयोमे ओतबे सभकेँ
बेटा बिकाइ किएक बेटीकेँ सभ हटाबै छैक

दुनियाँक रीत एहन 'मनु'केँ नै सोहाइ छैक
खोपरीमे रहए जे सभक घर बनाबै छैक ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-18)

गजल- 25

अनकोसँ सम्बन्ध जोड़ाबै छै पाइ
छोटकार्कें बड़का बनाबै छै पाइ

फूसियो बिकाइ छै मोलेमे आइ तँ
सतकेँ सभतरि नुकाबै छै पाइ

ज्ञानक कनिको मोल नहि रहल
प्रवचन सभटा सुनाबै छै पाइ

नहि माए बाबू नहि भाइ बहिन
दुनियाँमे सभकेँ कनाबै छै पाइ

चिन्हार नै अनचिन्हार एहिठाम
'मनु' आइ सभकेँ हँसाबै छै पाइ ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-13)

गजल- 26

मारी माछ नहि ऊपछी खत्ता
भरि समाज घोड़नकेँ छत्ता

परचट्ट बनल जनता छी
खाइ छी गरदनिपर कत्ता

कांकोड़ बिएल कांकोड़े खए
भय गेल देशक लत्ता लत्ता

सगरो नाँघल जाइत अछि
छन छन मरयादाकेँ हत्ता

रहब भरोसे कतेक 'मनु'
भेटे एक दिन हमरो भत्ता ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-11)

गजल- 27

सुरसाक मुँह बेएने महगाइ मारलक
बरख-बरखपर पाबि बधाइ मारलक

छलहुँ भने बड़ नीक बिन बन्हले कतेक
गोर-नार कनियाँ संगक सगाइ मारलक

झूठक रंगमे डूबि जीबितहुँ कतेक दिन
रंग हटैत देरी झूठक बड़ाइ मारलक

सुधि बिसरि कए सभटा निसामे बहेलहुँ
दिन राति पिया कए गाम गमाइ मारलक

भौतिक सुखमे डूबल 'मनु' सगरो दुनियाँ
जतए ततए फरजीकेँ उघाइ मारलक ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-17)

गजल- 28

सभकेँ हम करि सम्मान सभ बुझैत अछि गदहा
सभकेँ गप्प हम सुनै छी सभ कहैत अछि गदहा

नवयुवक फँसल भमरमे साधु करए कबड्डी
देखू गाँधी टोपी पहिर किछु कहबैत अछि गदहा

भगवा चोला पहिर-पहिर आँखिमे झोँकै मिरचाई
धर्माचार बनल बैसल धर्म बेचैत अछि गदहा

जंगल बनल समाजमे सोनितसँ भिजल धरती
शेर सगरो पड़ा गेलै चैनसँ सुतैत अछि गदहा

सभतरि मचल हाहाकार मनुक्ख खाए गेल चाड़ा
भ्रष्टाचारमे डूबि ‘मनु’ देश चलबैत अछि गदहा ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-20)

गजल- 29

गीत आ गजलमे अहाँ ओझराति किएक छी
हुए मैथिलीक विकास अंसोहाति किएक छी

परती पराँत जतए कोनो उपजा नै होइ
तीन फसल ओतएसँ फरमाति किएक छी

जतए सह सह बिच्छू आ साँप भरल होइ
ओतए बिना नोतने अहाँ देखाति किएक छी

अपन चटीएसँ नै फुरसैत भेटे अहाँकेँ
सिलौटपर माथ फोरि कऽ औनाति किएक छी

आँखि पथने बरखसँ अहीँक रस्ता तकै छी
प्राणसँ बेसी ‘मनु’ मनकेँ सोहाति किएक छी ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण- 17)

गजल- 30

किछु एहन काज करब हमहूँ
नै फोटोमे टाँगल रहब हमहूँ

एलहुँ जन्म लए कए दुनियाँमे
एक नै एक दिन मरब हमहूँ

कुक्कुर बिलाई जकाँ पेट पोसैत
आब जुनि ओहेन बनब हमहूँ

आगू बढ़ि नव समाज बनाएब
नै पाछू आब आगू चलब हमहूँ

खाख छनि 'मनु' बहुत बौएलहुँ
आब अपने घर बसब हमहूँ ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण -13)

गजल- 31

गजल नहि लिखतौं तँ हम करितौं की
गजल बिनु जिनगी अपन जीबितौं की

शराबमे निसा छैक बुझलहुँ हमहूँ
शराब नहि पीबितौं तँ हम पीबितौं की

सभ कहलक नहि दिमाग हमरामे
एहिसँ बेसी लए कए हम पबितौं की

दुनियाँमे सभतरि भऽ जाइ सोने सोना
तँ कहू सोनाकेँ कियो कनिको पूछितौं की

मन मारने 'मनु' बैसल छी नहि बुझू
एते हल्लामे बजितौं तँ अहाँ सुनितौं की ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण - 15)

गजल- 32

खूर देलखिन्ह ओ
सोधि लेलखिन्ह ओ

देख मोका नीकसँ
चाभी पेलखिन्ह ओ

माए-बेटाकेँ देखू
फूट केलखिन्ह ओ

नीक-नीक साड़ीमे
फीट भेलखिन्ह ओ

गाम-गाम घूमी कऽ
नाम केलखिन्ह ओ ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-7)

गजल- 33

अहाँ रहूँ घरे हम ठानि अबै छी
एहि पापी पेट लेल छानि अबै छी

रोटी पर नून नै घी पीबि सपना
हुनक भोजक मंत्र जानि अबै छी

कमौआ पुतक लातो सोहनगर
गरीब घरक कोड़ो गानि अबै छी

चानि पर तेलक अभाबे केश नै
कनियाँगतक खेत फानि अबै छी

गप्पक कोनो खतिहान नै भेलैए
‘मनु’ बैसू हम पीबि पानि अबे छी ❑

(सरल वार्णिक बहर - वर्ण 13)

गजल- 34

हमर तोहर संग भेल
सगर समाज तंग भेल

रहल शराब निसा नहि
आब जीवनक अंग भेल

सुतल मचानपर छलौं
अपन चुमान भंग भेल

अपन पबैत संग छलौं
सगर कपार चंग भेल

भरल एतेक रंग देख
'मनु'क करेज दंग भेल ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण- 10)

गजल- 35

कहलन्हि ओ मंदीरमे नहि पीबू एतए शराब
कोनठाम ओ नहि छथि कहु पीबू ततए शराब

ई नहि अछि खराप बदनाम एकरा केने अछि
ओ की बुझत भेटलै नहि जेकरा कतए शराब

मरलाबादो हम नहि पियासल जाएब स्वर्गमे
जाएब जतए सदिखन भेटए ओतए शराब

मारा-मारि भऽ रहल अछि जाति पातिकेँ नामपर
मेल देखक हुए तँ देखू भेटए जतए शराब

सभ गोटेकेँ निमंत्रण ससिनेह ‘मनु’ दैत अछि
आबै जाए जाउ सभमिल पीब बहुतए शराब ❑

(सरल वार्णिक वर्ण, वर्ण-19)

गजल- 36

बेटी नहि होइ दुनिआमे कहु बेटा लाएब कतएसँ
जँ दीपमे बाती नहि तँ कहु दीप जड़ाएब कतएसँ

आबै दियौ जगमे बेटीकेँ के कहे ओ प्रतिभा इन्द्रा होइ
भ्रूण-हत्या करब तँ कल्पना सुनीता पाएब कतएसँ

मातृ-स्नेह, वात्सलकेँ ममता बेटी छोरि के दोसर देत
बिन बेटी वरकेँ कनियाँ घरमे सजाएब कतएसँ

धरती बिन उपजा कतए घर बिनु कतए घराड़ी
बिन बेटी सपनोमे नव संसार बसाएब कतएसँ

हमर कनियाँ माए बाबी ओहो तँ किनको बेटीए छथि
बिनु बेटी एहि दुनिआमे ‘मनु’ कहु आएब कतएसँ ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-21)

गजल- 37

नहि हमरा सागक तोड़न चाही
नहि हमरा पातक छोड़न चाही

नव मिथिला निर्माणक बल लेने
शुभ मिथिला राजक जोड़न चाही

सूपक भाँटा सन डोलति लोकक
मोनक बदलति नै मोरन चाही

बिनु जानक भय केने छोरै नहि
घर घर बिषबिश्षी घोड़न चाहि

हक हमरा एखन अप्पन चाही
सभटा तीमन नहि फोड़न चाही ❑

(वर्ण-13, मात्रा- नअ नअटा दीर्घ सभ पाँतिमे)

गजल- 38

टोना ओहे जे टोनै सभकेँ
तारी ओहे जे तारै सभकेँ

लेखक ओहे जे मानै मनकेँ
रचना सभ हुनकर छूबै सभकेँ

कनियाँ ओहे जे भाबै वरकेँ
सासुरमे अपना बूझै सभकेँ

नेता ओहे जे माने विधि नै
जूता मुक्का जे खालै सभकेँ

घरकेँ बेटा नै राखै मनदू
आश्रम आगू ओ जीतै सभकेँ ❑

(मात्रा क्रम - नअ नअटा दीर्घ सभ पाँतिमे)

गजल- 39

जकर मोनक रावण नै मरलै
राम आजुक कोना ओ बनलै

डशल साँपक पइनो मंगै छै
डशल मनुखक कनिको नै कनलै

गेल आँगन घर सभ पलटै छै
मोन भेटत कोना जे जड़लै

हाथ रखने सभतरि भस्मासुर
निकलितो साउध बाहर डरलै

छोड़ि ढेपापर चुगला ‘मनु’केँ
शहर दिस नेन्ना सभटा भगलै ❑

(मात्रा क्रम : 2122-22-222, सभ पाँतिमे)

गजल- 40

एमरीक पूजा जोड़ पकरने छै
गाम गाम मैयाकेँ पसारने छै

एक दोसरामे होड़ छैक लागल
सभक बुद्धिकेँ के आबि जकरने छै

पाठ माइकसँ छकरैत आँखि मुनिने
अपन मायके सभ नाम बिसरने छै

एक कोणमे छथि चूप मूर्त मैया
लोक नाच गाजा भाँग दकरने छै

'मनु' किछो जँ बाजल आँखि खोलि कनिको
लोक ओकरेपर गाल छकरने छै ❑

(मात्रा क्रम : 21-21-22/21-21-22)

गजल- 41

हम हँसलौ तँ संसार ई हँसल
कानलपर हमर नै कियो कनल

सिदहामे बझल आइ लोक सभ
आनक नै सरोकार छै बचल

घुन खेने सगर घरक खामकेँ
ख’र बाती निकलि डोलिते चलल

खूनसँ ओरयानी सभक पटल
सुनतै आब के केकरो कहल

‘मनु’ मनभौक गुड़ चौर खा कए
किरदानी सभक देखते रहल ❑

(मात्रा क्रम : 2221-221-212)

गजल- 42

आखर आखर जोड़ि जोड़ि कऽ जीवनक ग्रन्थ लिखने छी
कोड़ो बाती तोड़ि तोड़ि कऽ हम माघक जाड़ तपने छी

रखलौं जगमे पहिल डेग जखन सपना छोड़ि किछु नै छल
बड़ बड़ साँपक एतए धरि आबैमे जहर सहने छी

अप्पन जीवन केर जोड़ घटा सभटा एसगर केलौं
भूखे रहितो पेट हमर मुदा नै किनकोसँ मँगने छी

झोपड़ पट्टी केर भीत बनाबी दिन भरि अपन हाथसँ
दोसर दिन तोरैत लातसँ चण्डालक आँखि तकने छी

दू दूटा अठमासु दूध मुँहा भूखल हमर कोरामे
नै दुख सहि नेनाक देख मुँह प्रभुकेँ ‘मनु’ सुमरने छी ❑

(मात्रा क्रम : 2222-21211-2222-1222, सभ पांतिमे)

गजल- 43

एहि ठाम साट हेराए गेलै रामा
फेर आइ बलम बौराए गेलै रामा

चढ़ल साइठक जबानी केहन बुढ़बापर
चूलहाक नार चोराए गेलै रामा

गाममे बसल घरे घर छै कंठी धारी
साँझ परल माँछ झोराए गेलै रामा

देख ढंग पुतक करनी आजुक आँगनमे
बाप केर आँखि नोराए गेलै रामा

'मनु' समाजमे सगर मोदी जीकेँ अबिते
माल संग चोर पकराए गेलै रामा ❑

(मात्रा क्रम : 212121-2222-222)

गजल- 44

वेदरदी नै बुझलक हमरो जखन
जीबू कोना जीवन झहरल तखन

घर घर अछि रावण रामक भेषमे
कतए रहती आजुक सीता अखन

दुश्मन बनि गेलै भाइक भाइ अछि
टाकामे भसिएलै कतए लखन

सुखि गेलै ममता मायक कोइखक
भदबरिया पोखरि सन भेलै भखन

सगरो पसरल 'मनु' सहसह दू मुँहा
काइट नै लेए के कतए कखन ❑

(मात्रा क्रम : 222-222-2212)

गजल- 45

मनक भीतर माटिक प्रेम काबा सन
लगैए ई दूर भय गर्म आबा सन

दियावाती भेल नै चौरचन भेलै
मनोरथ भसि गेल ताड़ीक डाबा सन

अपन अँगने छोरि एलहुँ सगर हित हम
फरल दुश्मन एतए बड्ड झाबा सन

करेजामे दर्द गामक बसल एना
बिलोका बनि ओ तँ चमकैत लाबा सन

पिया बैसल दूर परदेशमे ‘मनु’ छथि
विरहमे हम छी हुनक बनल बाबा सन ❑

(मात्रा क्रम : 1222-2122-1222)

गजल- 46

दुनियाँसँ हिंसा मरि जेए
बस पाँच काठी परि जेए

जे झूठमे सदिखन डूबल
एहन तँ दुनियाँ गड़ि जेए

नै घूस बिन जतए शासन
ओ सगर आसन जरि जेए

सड़लै जँ एक्को पोखरिमे
सभ माछ ओकर सड़ि जेए

'मनु' भक्त जतए जन्मलिए
ओ वंश सगरो तरि जेए ❑

(मात्रा क्रम : 2212-2222)

गजल- 47

हारिकेँ बाद जीतो तँ अबिते छै
रातिकेँ बाद सगरो इजोते छै

दुखक माला जपै छी किए दिन भरि
एहि जगमे घड़ी सुखक बहुते छै

नोर राखू पजारब गजल एहिसँ
किछु पुरनका खड़ेएल रहिते छै

बेंगकेँ जिन्दगी नै इनारे भरि
भादबक बाढ़िमे ओ तँ जनिते छै

छोरि तकनाइ मुँह हाथ नम्हर करु
किछु पबै लेल 'मनु' दाम लगिते छै ❑

(मात्रा क्रम ; 212-212-212-22)

गजल- 48

जँ नाराज छी मानि जाऊ
पिया प्रेम बिधि जानि जाऊ

महिष भेल पारी तरे अछि
घरक खीरसा छानि जाऊ

मरल माछ पौरल दही अछि
हिया हमर सभ गानि जाऊ

करीया बड़द मुइल परसू
किछो नै कनी कानि जाऊ

छिटल रोपनी सम्हरत नै
घरो घुरि अहाँ ठानि जाऊ ❑

(बहरे मुतकारिब, मात्रा क्रम : 122-122-122)

गजल- 49

हकन नोर माए कनै छै
तकर पुत्र मुखिया बनै छै

कते आब बैमान बढ़लै
गरीबक टकाकेँ गनै छै

पतित बनल नेता तँ देशक
दुनू हाथ ओ मल सनै छै

पएलक कियो जतय मौका
अपन बनि कऽ ओहे टनै छै

बनल भोकना जेठरैअति
मुदा ‘मनु’ तँ सभटा जनै छै ❑

(बहरे मुतकारिब, मात्रा क्रम : 122-122-122)

गजल- 50

रहब आब नै दास बनि हम
अपन नीक इतिहास जनि हम

जखन ठानबै हम अपनपर
महासागरो देब सनि हम

उठा मांथ जतएसँ तकलहुँ
दएलहुँ तँ नक्षत्र गनि हम

बिपति केर माहूर पीने
चलै छी अपन मोन तनि हम

जमल खून मारलक धधरा
लएलहुँ विजय विश्व ठनि हम ❑

(बहरे मुतकारिब, मात्रा क्रम : 122-122-122)

गजल- 51

धाख सभटा बिसरि गेलै
घोघ हुनकर उतरि गेलै

झूठ कोनाकेँ नुकायत
जखन सोंझा बजरि गेलै

सय बचायब बचत कोना
लाज सभटा ससरि गेलै

ओ छलै फेसनसँ डूबल
काज सयटा पसरि गेलै

भेल नेता नीनमे सभ
देश सगरो रगरि गेलै ❑

(बहरे रमल, मात्रा क्रम : 2122-2122)

गजल- 52

सुख भरल संसार चाही
दुखक नै अंबार चाही

मोन सदिखन खूब हरखे
बमक नै टंकार चाही

भरल घर मिथलाक ज्ञानसँ
अन्नकेँ भंडार चाही

डोलि अम्बर फूल बरखे
भक्तकेँ झंकार चाही

सभ कियो 'मनु' हँसि कऽ भेटे
एहने संसार चाही ❑

(बहरे रमल, मात्रा क्रम : 2122-2122)

गजल- 53

रंग देखू भरल अछि सभतरि तँ खूनसँ
देश गेलै गैल बैमानीक घूनसँ

साग तरकारी कते भेलै महग छै
आब छी पोसैत नेना भात नूनसँ

नामकेँ लत्ता गरीबक देहपर अछि
लदल कबिलाहा कते छै गरम ऊनसँ

छैक भिसकी रम बहै भरपूर सभतरि
एखनो हम गुजर केलौं पान चूनसँ

मारि गरमी देख 'मनु' बेबस कनै छी
ओ तँ अछि पेरीसमे पोसाति जूनसँ ❑

(बहरे रमल, मात्रा क्रम : 2122-2122-2122)

गजल- 54

तेल बिनु जेना निशठ टेमी धएने
बिनु पिया जीवन बितत कोना अएने

बरख बरखसँ हम तुसारी पूजने छी
बुझब की सुख साँझ पाबनि बिनु कएने

भ्रूण हत्यारा दुखक बड़ नर्क भोगत
सुख बुझत कोना कँ धीया बिनु पएने

मोल जीवनमे हमर बाबूक की अछि
मोन बुझलक छन्नमे हुनका गएने

रंग बदलति देखलौं सभकेँ हँसीमे
देखि 'मनु' दुनियाँक रहलौं मुँह बएने ❑

(बहरे रमल, मात्रा क्रम : 2122-2122-2122)

गजल- 55

जखन खगता सभसँ बेसी तखन ओ मुँह मोड़ि लेलनि
जानि आफत छोरि हमरा सुखसँ नाता जोड़ि लेलनि

देखि चकमक रंग सभतरि ओहिमे बहि ओ तँ गेली
जानि खखड़ी ओ हमर हँसिते करेजा कोड़ि लेलनि

बन्द केने हम मनोरथ अप्पन सदिखन चूप रहलौं
पाञ्च बरखे आबि देख फेर सपना तोड़ि लेलनि

दुखसँ अप्पन अधिक दोसरकेँ सुखक चिन्ता कएने
आँखि जे फूटै दुनू तँ एक अप्पन फोड़ि लेलनि

चलक सप्पत संग लेलौं जीवनक जतराक पथपर
मेघ दुखकेँ देखते ओ संग 'मनु'केँ छोड़ि लेलनि ❑

(बहरे रमल, मात्राक्रम : 2122 चारि-चारि बेर सभ पांतिमे)

गजल- 56

जड़ि फसादक बड़्ड़ हमहूँ रोपने छी
छी अहाँ खुश तैँ अपन मुँह फेरने छी

दोस्तकेँ दोस्ते ठकैए आइ सगरो
पीठमे भोँकैत छूरा देखने छी

भाइ माँ बाबूक आँखिक नोर बिसरि
सोन चानी की करब जे अरजने छी

संग खूनक जे खलेलक सगर होली
एहनोकेँ नै किए हम बारने छी

छै चुनावक हाल एहन देश भरिमे
'मनु' अखाड़ा राजनीतिक पकड़ने छी ❑

(बहरे रमल मात्रा क्रम : 2122-2122-2122)

गजल- 57

जीवन कखन तक छैक नै बुझलक कियो
कखनो करेजक गप्प नै जनलक कियो

भेटल तँ जीवनमे सुखक संगी बहुत
देखैत दुखमे आँखि नै तकलक कियो

दुखकेँ अपन बेसी बुझै किछु लोक सभ
भेलै जँ दोसरकेँ तँ नै सुनलक कियो

सदिखन रहल भागैत सभ काजे अपन
नै नोर आनक घुरि कए बिछलक कियो

जीवन तँ अछि जीवैत ‘मनु’ सभ एतए
मरियो कऽ जे जीवैत नै बनलक कियो ❑

(बहरे रजज, मात्रा क्रम : 2212 तीन-तीन बेर सभ पाँतिमे)

गजल- 58

घोड़ा जखन कोनो भऽ नाँगड़ जाइ छै
कहि ओकरा मालिक झटसँ दै बाइ छै

माए बनल फसरी तँ बाबू बोझ छथि
नव लोक सभकेँ लेल सभटा पाइ छै

घर सेबने बैसल मरदबा छै किए
चिन्हैत सभ कनियाँक नामसँ आइ छै

कानूनकेँ रखने बुझू ताकपर जे
बाजार भरिमे ओ कहाइत भाइ छै

खाए कए मौसी हजारो मूषरी
बनि बैसलै कोना कऽ बड़की दाइ छै

पोसाकमे नेताक जिनगी भरि रहल
जीतैत मातर देशकेँ 'मनु' खाइ छै ❑

(बहरे रजज, मात्रा क्रम : 2212 तीन-तीन बेर सभ पाँतिमे)

गजल- 59

हमर मिथिलाक माटिसँ सोन उपजैए
कऽलसँ बनि पानि अमृत धार निकलैए

सगर पोखरिक छह छह पानिमे गामक
रुपैया बनि मखाने माछ गमकैए

घरे घर सभ छटैए बड्ड बुधियारी
दलानसँ राजनीतिक जैड़ जनमैए

युवार्कें हाथ बल छै ओ बढ़त आँगा
जँ लेलै ठानि छनमे चान पकरैए

अपन माटिसँ भएलहुँ दूर 'मनु' कोना
विरहमे हमर आँखिसँ नोर झहरैए ❑

(बहरे हजज, मात्रा क्रम : 1222-1222-1222)

गजल- 60

लुटेए गाम गाबेए कियो लगनी
किए लागल इना सभकेँ शहर भगनी

कियो नै सोचलक परदेश ओगरलक
भऽ गेलै गामपर माए किए जगनी

उठेलौं बोझ हम आनेक भरि जिनगी
अपन घरमे रहल सदिखन बसल खगनी

बिसरलौं सुधि सगर कोना कऽ हम हुनकर
बनेलौं अपन जिनका हम घरक दगनी

अपन जननी जनमकेँ भूमि नहि बिसरल
भरल बाँकी तँ अछि सभठाम 'मनु' ठगनी ❑

(बहरे हजज, मात्रा क्रम : 1222 तीन तीन बेर सभ पांतिमे)

गजल- 61

देख मुँह मूँगबा बहुतो बटाइत छै
नाम ककरो गरीबक नै सुहाइत छै

अन्न जे भेट जेए भुखलकेँ साँझे
एहि लोभक तरे दिन भरि खटाइत छै

मीठ भाषण बरख पाँचे कते दै छै
जीतकेँ बाद नेतासभ नुकाइत छै

घूस खा खा कऽ बनलै भोकना पारा
आन दमड़ीसँ चमड़ी बड़ चबाइत छै

भ्रष्ट नेता घुमै बीएमडब्लूमे
एखनो ‘मनु’ गरीबक हक दबाइत छै ❑

(बहरे मुशाकिल, मात्रा क्रम : 2122-1222-1222)

गजल- 62

खाल रंगेल गीदड़ बड्ड फरि गेलै
एहने आइ सभतरि ढंग परि गेलै

घुरि कऽ इसकूल जे नै गेल जिनगीमे
नांघिते ओ तँ तिरहुत लोक तरि गेलै

देखलक भरल पूरल घर जँ कनखी भरि
आँखि फटलै दुनू डाहेसँ मरि गेलै

सभ अपन अपनमे बहटरल कोना अछि
मनुखकेँ मनुख बास्ते मोन जरि गेलै

बीछतै 'मनु' करेजाकेँ दरद कोना
जहरकेँ घूंट सगरो पी कऽ भरि गेलै ❑

(बहरे मुशाकिल, मात्रा क्रम : 2122-1222-1222)

गजल- 63

घोड़ कलियुग घड़ी केहन आबि गेलै
एकटा कंस घर घरमे पाबि गेलै

बनल अछि रक्षकेँ भक्षक आब सगरो
बिबश जनताक हक सभटा दाबि गेलै

अन्न खा थाह पेटक किछु नै पएलक
मालकेँ सगर भूस्सा चुप चाबि गेलै

शहर नै गाम आ घर-घर आब देखू
गीत पूवक हबामे सभ गाबि गेलै

डूबि नव फेशनक संगे आइ दुनियाँ
एक गजमे अरज देहक जाबि गेलै ❑

(बहरे असम, मात्रा क्रम : 2122-1222-2122)

गजल- 64

दड़ड़िते खेसारी बखाड़ी बनेलक
बीच तरहत्थीपर दही ओ जमेलक

बिसरि रौदी दाही अपन कष्ट सभटा
कर्म पथपर खेतिहर चलि हऽर चलेलक

केखनो नहि पढ़ि रहल मड़राति सगरो
राजमंत्री बनि उम्र भरि ओ कमेलक

पहिर चश्मा दिन राति जे खूब पढ़लक
घूस दय चपरासी किरानी कहेलक

देखिते जे इस्कूलकेँ घुरि परेए
बनि कऽ 'मनु' शाइर गजल सभकेँ सुनेलक ❑

(बहरे खफीक, मात्रा क्रम : 2122-2212-2122)

गजल- 65

भाइ भाइसँ बैरीन केलक रुपैया
गाम छोड़ा सभकेँ भगेलक रुपैया

आँखि मुँह मुनि परदेसमे जा कऽ बसलहुँ
सगर बुझितो माहुर पियेलक रुपैया

आइड़े आइड़ खऽर बटोरैत माए
खेतमे बाबूकेँ कनेलक रुपैया

गोल चश्मा मुन्सी लगा ताकए की
खून चुसि चुसि सभटा दबेलक रुपैया

भाइ बाबूकेँ 'मनु' बिसरि जाउ छनमे
राज नै आब तँ घर चलेलक रुपैया ❑

(बहरे खफीक, मात्रा क्रम : 2122-2212-2122)
अंतिम शेरक दोसर पांतिमे दूटा हटल-हटल(आब तँ, 21-1=22) लघुकेँ दीर्घ मानक छूट लेल गेल अछि।

गजल- 66

आइ सगरो गाममे हाहाकार छै
ई मचल एना किए अत्याचार छै

आँखि मुनने बोगला बैसल भगत बनि
खून पीबै लेल कोना तैयार छै

देखतै के केकरा आजुक समयमे
देशकेँ सिस्टम तँ अपने बेमार छै

देखते मुँह पाइकेँ कोना मुँह मोरलक
मांगि नै लेए खगल सभ बेकार छै

भरल भिरमे एखनो धरि एसगर छी
केकरो मनपर ‘मनु’क नै अधिकार छै ❑

(बहरे जदीद, मात्रा क्रम : 2122-2122-2212)

गजल- 67

हम गजल कोना कहू भीड़मे रसगर
मुँह सगर बेने मनुख भेसमे अजगर

पाइ घोटाला हबालाक खेएकेँ
रोग छै सबकेँ पकरने किए कसगर

बहिन माए भाइ बाबू अपन कनियाँ
सब तकै सम्बन्धमे दाम ली जथगर

गामकेँ बेटा परेलै शहर सबटा
खेत एकोटा रहल आब नै चसगर

छै बिकाइ प्रेम दू-दू टका मोले
रीत ‘मनु’केँ नै लगै छै कनी जसगर ❑

(बहरे कलीब, मात्रा क्रम : 2122-2122-1222)

गजल- 68

आब चाही बस अहाँ केर मुस्कीटा
नै मरब पीने बिनु प्रेम चुस्कीटा

जे अहाँ बजलौं करू ओकरो पूरा
की अहूँ भेलौं खली बम्म फुस्कीटा

नै कटाबू नाक आबू सभक सोंझाँ
की तरे-तर रहब मारैत भुस्कीटा

डर लगैए भीड़मे नै निकलु बाहर
देख टीभी बसि घरे करब टुस्कीटा

'मनु' दखेलौं सभक अपनो कनी देखू
बिसरि अप्पन काज नै बनब घुस्कीटा ❑

(बहरे कलीब, मात्रा क्रम : 2122-2122-1222)

गजल- 69

डूबने बिनु बुझब कोना निशा की छै
प्रेम बिनु केने कि जानब सजा की छै

बसि कऽ धारक कात हेलब सिखब कोना
आउ देखी कूदि एकर मजा की छै

नोकरी कय नै कियो धन कमेलक बड़
अपन मालिक बनु तँ एहिसँ भला की छै

आइ अप्पन बलसँ पीएम बनतै ओ
हारि झूठ्ठे ढोल पीटब हबा की छै

रोडपर कोनो करेजक परल टुकड़ा
ओहि छनमे ‘मनु’सँ पुछबै दया की छै ❑

(बहरे कलीब, मात्रा क्रम : 2122-2122-1222)

गजल- 70

लदने नै अनेरे लाश छी कान्हपर
जीवन केर सबटा आश छी कान्हपर

दिन भरि जे कमेलौं ओकरे दाम अछि
ढाकीमे बुझू नै घास छी कान्हपर

खूजल उक जकाँ कोना फरफराइ छी
नै रखने मनुक्खक भाष छी कान्हपर

भैया भेल नेता आब नै हम डरब
रखने हाथ सदिखन खास छी कान्हपर

कुक्कुर पोसि नव-नव साहबी केर 'मनु'
दू कट्ठा बचेने चास छी कान्हपर ❑

(बहरे कबीर, मात्रा क्रम : 2221-2221-2212)

गजल- 71

चाही आश नै कनिको चमत्कारकेँ
मेहनतसँ बसायब अपन संसारकेँ

आजुक नवयुवक हम डरब धमकीसँ नै
छोरब नै अपन कनिको तँ अधिकारकेँ

बुझि अप्पन कियो छनमे करेजा लऽ लिअ
टेढ़ीमे जँ छी नै सहब सरकारकेँ

धरतीपर जते बासन पकल काँच छै
एक्के हाथ सगरो गढ़ल कुम्हारकेँ

सहलों चोट सय भरि जन्म सोनारके
'मनु' के सहत एक्को चोट लोहारकेँ ❑

(बहरे कबीर, मात्रा क्रम; 2221-2221-2212)

गजल- 72

होए मोन हरखीत ढोलो सोहाइ
नै बिनु कारने मीठ बोलो सोहाइ

प्रियगर भेट नवकी कनियाँ गेलै जँ
हाथक हुनकर नोनगर ओलो सोहाइ

जेबीमे जखन भरल रुपैया होइ
तहने महग सस्ताक मोलो सोहाइ

सिम्बर तूरकैँ नीक गदगर मसलंग
सुन्नर ओहिपर आब खोलो सोहाइ

भेटै सोन 'मनु' जाहिमे भरि सन्दूक
एहन घरक महकैत झोलो सोहाइ ❑

(बहरे हमीद, मात्रा क्रम : 2221-2212-2221)

गजल- 73

सौंसे सिरा हाटपर खा तीमन घरक तीत लगलै
सुलबाइ बाबूक गप्पसँ ससुरक वचन हीत लगलै

अप्पन घरक खेत आँगनमे खटब बुड़िबक बुझलकै
परदेशमे नाक अप्पन रगड़ैत नव रीत लगलै

आदर्श काजक चलब गामे-गाम झंडा लऽ आगू
माँगेत घर भरि तिलक बेटा बेरमे जीत लगलै

प्रेम तँ बदलै सभक बुझि धन बल अमीरी गरीबी
निर्धन अछूते रहल धनिकाहा कते मीत लगलै

माए बहिन केर बोलसँ सभकेँ लगै कानमे झ’र
सरहोजि साइरक गप ‘मनु’केँ मधुरगर गीत लगलै ❑

(बहरे मुजस्सम वा मुजास, मात्रा क्रम : 2212-2122/2212-2122)

गजल- 74

(हजल : हजल मने हास्य गजल)
लाल धोती केश राँगि समधि चुगला बनला ना
बेटा बेचि आनि बरयाती ई पगला बनला ना

सभ बिसरि आँखि मुनि ध्यानसँ ताकथि रुपैया
भीतर कारी बाहर उज्जर बोगला बनला ना

खेत खड़ीहान बेच बेच पीबथि बभना तारी
आब लंगोटा खोलि खालि ई तँ हगला बनला ना

तमाकुल चूनबैत पसारने दिनभरि तास
घर आँगनक चिंता नहि ई खगला बनला ना

जेल छोरि बाहर आबि हाथ जोरि माँगथि भोट
जितैत देरी 'मनु'कैं बिसरि दोगला बनला ना ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-18)

गजल- 75

गदहराज धन्य छी दिअ सदबुद्धि हमरो अहाँ
उपर लदने बोझ नै आँखि देखाबी ककरो अहाँ

धियान मग्न रहि मधुर तान ढेंचू-ढेंचू करै छी
मन्त्र जनैत छी शास्त्रीय गायन कए सगरो अहाँ

मनुक्ख पबैत सम्मान विशेष नाम अहींक लऽ कऽ
बिन आपति बर्दास्त करी नहि करी झगरो अहाँ

स्वर्ग गेलौं लागले छान ई कथा जगजाहिर अछि
करियौ पैरबी हुए हमर बियाह तकरो अहाँ

गृहस्थक जुआ कान पर 'मनु' खटब आब कोना
दिअ गदहपन जँ बुझलौं अपन जोगरो अहाँ ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-19)

गजल- 76

हेरौ कोआ खसा दे एगो आम हमरो लेल
देबौ बाली माए जे देतै दाम हमरो लेल

चल-चल गे बूचनी चलै आब खेलएब
भऽ गेल देलकै जे माए काम हमरो लेल

नहि छमकै एना लए कऽ अपन पुतूल
तोरासँ सुन्नर देथीन राम हमरो लेल

बहुत केलहुँ काज लगेलहुँ बड़ राज
आबो तँ घुरि आउ बाबू गाम हमरो लेल

सभकेँ नाम गे माए कते सुन्नर-सुन्नर
किएक नहि 'मनु' सन नाम हमरो लेल ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-16)

गजल- 77

लाल-दाईकेँ ललना लाले लाल लगैत छथि
लाली अपन माएकेँ चोरा कऽ नुकाबैत छथि

हिनकर आँखिमे काजरक बिजुड़ीया लोके
मएयोसँ सुन्नर झिलमिल झलकैत छथि

लटकल माथपर सुन्नर लट हिनकर
देखियौंह चंद्रमाकेँ आब ई लजाबैत छथि

सुनि-सुनि बहिना सभ हिनकर किलकाड़ी
कियो खेलाबैत कियो हिनका झुलाबैत छथि

रंग-रूप चालि-चलन सभटा निहाल छनि
मुस्कीसँ ई तँ अपन ‘मनु’केँ लुभाबैत छथि ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-17)

गजल- 78

बिनु पानिक नाउ चलाएब हम
बिनु चक्काक गाड़ी बनाएब हम

हमर मोनमे तँ जेँ किछु आएत
बिन सोचने सभ सुनाएब हम

अपन ब्याहमे हम नहि जाएब
सराध दिन बजा बजाएब हम

कनियाँकेँ लय ओकर नैहरसँ
सासुरसँ खूब कतियाएब हम

'मनु' मन चंचल टोनए सभकेँ
केकरो हाथ नै घुरि आएब हम ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-13)

गजल- 79

हे माए नहि चरबै लए गाए जेबौ हम
जेबौ आब इसकूल कोपी पेन लेबौ हम

अपन भाग हम आब अपनेसँ लिखबौ
कुकुर जकाँ नै माँड़े तिरपीत हेबौ हम

रोगहा-रोगहा सभ कियो कहए हमरा
एक दिन बनि डाक्टर रोग हरेबौ हम

टूटल फूटल अपन फुसक घर तोरि
सुन्नर सभसँ पैघ महल बनेबौ हम

हमरा कहैत अछि 'मनु' मुर्ख चरबाहा
पढ़ि कए सभ चरबाहाकेँ पढ़ेबौ हम ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण- 16)

गजल- 80

माएगै हमर फुकना की भेल
दाइ हमर झुनझुना की भेल

बाबाकेँ कहबनि सभ हरेलौं
सभटा हमर खेलौना की भेल

दूध-भात आब हम नहि खेबौ
पेटमुका हमर सन्ना की भेल

हम जे बुललौं बाबा बाबी संगे
रातिक हमर सपना की भेल

‘मनु’ मामा परसु जे अनलन्हि
हमर निकहा चुसना की भेल ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-12)

गजल- 81

चम चम चम चम तारा चमकए
बौआ कए हाथक तरुआ गमकए

करीया बकरी नव उज्जर मंहिस
लाल बाछी किए दौर-दौर बमकए

बौआक घोड़ा सय-सय टाकाकेँ देखू
काकाकेँ घोड़ा पिद्दी कतेक कमकए

बाबीकेँ साड़ी माएकेँ लहंगा बहए
बौआकेँ घघरी तँ कतेक छमकए

बौआ हमर आब गुमसुम किएक
'मनु' संग ठुमुक-ठुमुक ठुमकए ❑

(सरल वार्णिक, वर्ण-14)

गजल- 82

बेलगोबना नहि सुनलक गप्प
ओकर माथपर बेल भेलै धप्प

बरखा बुनि लऽ कऽ एलै कारी मेघ
पएर तर पानि करे छप्प छप्प

बोगला भेल देखू कतेक चलाक
एके पएरे करे दिन भरि जप्प

बुढ़िया नानीकेँ दुनू काने हरेलै
चाह पीबे भरि दिनमे दस कप्प

बैस ‘मनु’ झोँटा छटा ले चुपचाप
नै तँ काटि देतौ कान हजमा खप्प ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-13)

गजल- 83

नानी गेलै देखै लेए बारीमे आलू
लाइ उठा कऽ ओकर भगलै लालू

आँखि मुनि चारमे बेंग नुकाबै छै
कालू कौआ बनल कतेक छै चालू

केहेन होइ छै ई भोटक नाटक
बनि गेलै राज मंत्री चोरबा कालू

झट पट नेना सभ दौड़ कऽ आबै
देखही देखही कते नचै छै भालू

दऽ दे नानी आब 'मनु'कैँ दू रुपैया
नै सोचै मनमे कोना एकरा टालू ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण- 13)

गजल- 84

सपना हमर हम वीर बनी
करतब करी आ धीर बनी

जे देशकेँ अपमान करै
ओकर करेजक तीर बनी

सबहक सिनेहक मीत रही
ककरो मनक नै पीर बनी

आबी समाजक काज सदति
धरतीक नै हम भीर बनी

किछु काज ‘मनु’ एहन तँ करी
मरियो कऽ आँखिक नीर बनी ❑

(मत्रा क्रम : 2212-221-12)

गजल- 85

नेना हम मएँकेँ आँखि जूराएब
मिथिलाकेँ अपन सोनासँ चमकाएब

छथि देखू घरे-घर बसल सीता राम
एहन आँन कतए मेल देखाएब

गंगा छथि बसल मिथिलाक पावन भूमि
डूम्मी मारि कमला घाट नाहाएब

मुठ्ठी भरि बिया भागक अपन हम रोपि
अपने माटिमे हँसि हँसि कऽ गौड़ाएब

'मनु' दे सपत घर घुरि आउ काका बाउ
नेन्नाकेँ कखन तक कोँढ़ ठोड़ाएब ❑

(बहरे रजज, मात्रा क्रम : 2221-2221-2221)

गजल- 86

चलै चुनमुन चलै गुनगुन तमासा घुमि कए आबी
जिलेबी ओतए छानैत तोहर भेटतौ बाबी

पढ़ैकेँ छुटल झंझट भेल इसकूलक शुरू छुट्टी
दसो दिन राति मेला घुमि कए नव वस्तु सभ पाबी

करीया बनरिया कुदि कुदि कए ढोलक बजाबै छै
चलै चल ओकरा संगे सगर नेना कनी गाबी

बनल मेनजन अछि बकरी पबति बैसल अचारे छै
बरद सन बौक दिनभरि चूप्प रहए पहिरने जाबी

बुझलकौ आब तोरो होसयारी 'मनु' तँ बुढ़िया गै
लगोने ध्यान वक कतएसँ सम्पति नीकगर दाबी ❑

(बहरे हजज, मात्रा क्रम : 1222 चारि-चारि बेर सभ पाँतिमे)

गजल- 87

तिला संक्रातिकैँ खिच्चैर खाले रौ हमर बौआ
लऽ जेतौ नै तँ कनिए कालमे ओ आबिते कौआ

चलै बुच्ची सखी सभ लाइ मुरही किन कए आनी
अपन माएसँ झटपट माँगि नेने आबि जो ढौआ

बलानक घाट मेलामे कते घुमि घुमि मजा केलक
किए घर आबिते मातर बुढ़ीया गेल भय थौआ

कियो खुश भेल गुर तिल पाबि मुरही खुब कियो फाँकैँ
ललन बाबा किए झूमैत एना पी कए पौआ

सगर कमलाक धारक बाटमे बड़ रमणगर मेला
किए सभ एतए एलै कि भेलै ‘मनु’ कुनो हौआ ❑

(बहरे हजज, मात्रा क्रम : 1222-1222-1222-1222)

गजल- 88

फेर एलै दिवाली लेबै फटक्का
फोरबै मिल कए सभ मारत ठहक्का

बड़ रमनगर बुसऽट नव अनलन्हि मामा
देखते सभ भऽ गेलै कोना कऽ बक्का

घीक लड्डू दुनू हाथे दैत भरि भरि
अपन बेटाक कोजगरामे तँ कक्का

दौड़ चलबैत सासुरकेँ फटफटिया
हरसँ भरि थालमे सौंसे फसल चक्का

आइ कुसियारक ट्रककेँ परल पाँछा
'मनु'क गामक सगर नव छौंड़ा उचक्का ❑

(बहरे असम, मात्रा क्रम : 2122-1222-2122)

गजल- 89

अहाँ तँ सभटा बुझैत छी हे माता
सुमरि अहाँकेँ कनैत छी हे माता

दीन हीन हम नेना बड़ अज्ञानी
आँखि किए अहाँ मुनैत छी हे माता

अहाँ तँ जगत जननी छी भवानी
तैयो नहि किछु सुनैत छी हे माता

श्रधाभाव किछु देलौं अहीँ हमरा
अर्पित ओकरे करैत छी हे माता

नहि हम जानी किछु पूजा-अर्चना
जप तप नहि जनैत छी हे माता

जगमे आबि ओझरेलहुँ एहेन
अहाँकेँ नहि सुमरैत छी हे माता

छी मैया हमर हम पुत्र अहीँकेँ
एतबे तँ हम बजैत छी हे माता ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-13)

गजल- 90

धूप आरती हम अनलहुँ नहि
जप-तप करब सिखलहुँ नहि

सदिखन कर्तव्यक बोझ उठोने
अहाँक ध्यान किछु धरलहुँ नहि

की होइत अछि माए पुत्रक नाता
एखन तक हम बुझलहुँ नहि

हम बिसरलहुँ अहाँकेँ जननी
अहुँ एखन तक सुनलहुँ नहि

अपन शरणमे लऽ लिअ हे माता
ममता अहाँक तँ जनलहुँ नहि ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-13)

गजल- 91

निर्धन जानि कऽ छोरि गेलहुँ माँ
कोन अपराध हम केलहुँ माँ

केहनो छी तँ हम पुत्र अहींकेँ
सभ सनेश अहींसँ पेलहुँ माँ

दामक तराजुमे नै एना जोखू
ममताकेँ पियासल भेलहुँ माँ

दर-दर भटकि खाक छनै छी
दर्शन अपन नै दखेलहुँ माँ

'मनु'केँ अपन सिनेह नै देलहुँ
सोंझाँसँ दूर आब भगेलहुँ माँ ❑

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-12)

गजल- 92

दर्शन दए हमरो तरू माँ
आशा हमर पूरा करू माँ

हम छी टुगर बेटा अहींकेँ
छनमे भवानी दुख हरू माँ

नै पाठ पूजा विधि जनै छी
कोना चरण तोहर परू माँ

अछि चित्त चंचल मोन भटकल
जीवनक आशा की धरू माँ

नै खोलबै मैया नजरि पट
के ई हरत 'मनु'केँ गरू माँ ❑

(मात्रा क्रम : 2212-2212-2)

गजल- 93

आइ मैया बजेलनि हमरा
अपन दर्शन दिएलनि हमरा

मनक शक्ती सगरो छनमे
आइ मैया दखेलनि हमरा

हुनक महिमा कते छनि भाड़ी
ज्ञानकेँ दिप जरेलनि हमरा

पाप सगरो हमर बिसरा कय
छोट बेटा बनेलनि हमरा

दय क' ममता अपन आँचरकेँ
‘मनु’ करेजसँ लगेलनि हमरा ❑

(मात्रा क्रम; 2122-122-22)

गजल- 94

हे राम बसु मनमे हमर
ई प्राण धरि तनमे हमर

सदिखन अहीँक ध्यानमे
नै मन बसै धनमे हमर

प्रभु दरसकेँ आशासँ ई
भटकैट मन बनमे हमर

एतेक मन चंचल किए
प्रभु रहथि कण कणमे हमर

हे राम ‘मनु’पर करु दया
नै मन बहै छनमे हमर ❑

(बहरे रजज, मात्रा क्रम : 2212-2212)

गजल- 95

चलि अहाँ कतए किए गेलहुँ मुरारी
एहि दुखियाकेँ हरत के कष्ट भारी

तान ओ मुरलीक फेरसँ आबि टारू
बिकल भेलहुँ एतए एसगर नारी

द्रोपतीकेँ लाज बचबै लेल एलहुँ
नित्य सय सय बहिनकेँ कोना बिसारी

बनि कऽ फेरसँ सारथी भारत बचाबू
सभक रक्षक हे मधुसुदन चक्रधारी

वचन जे रक्षाक देलहुँ ओ तँ राखू
कहत कोना 'मनु' अहाँकेँ हे बिहारी ❑

(बहरे रमल, मात्रा क्रम : 2122-2122-2122)

गजल- 96

हे भोला लिअ अपन शरणमे
नहि किछु भांगट हमर मरणमे

सबतरि घुरि हम आश हारलौं
नहि छी समरथ अपन भरणमे

सगरो मोनक मीत दूर अछि
किछु नहि भेटल पुण्य हरणमे

जीवन भरि हम मुर्ख बनल छी
भेटल सुख भोलाक वरणमे

पापक बोझसँ थाकि गेल छी
'मनु'केँ लय लिअ अपन चरणमे ❑

(मात्रा क्रम : 2222-21-212)

गजल- 97

शिव केर महिमा के नै जनैत अछि
सबहक मनोरथ पूरा करैत अछि

दिन राति भोला पीबैत भांग छथि
हुनकर चरणकेँ के नै गहैत अछि

पति ओ उमाकेँ सबहक पतित हरन
भोला हमर सबकेँ दुख हरैत अछि

बसहा सवारी बघछाल अंगपर
शमशानमे रहि दुनियाँ हँकैत अछि

नै मूँगबा खाजा चाहिएनि जल
'मनु' आक धथुरसँ हिनका पबैत अछि ❑

(मात्रा क्रम : 2212-2221-212)

गजल- 98

मैया हमर जगतारनि कल्याणी
सबहक अहाँ सुधि लेलौं महरानी

नै हम मिलब माँ बाटक गरदामे
चिंता किए जेकर माय भवानी

जग ठोकरेलक सदिखन ढेपासन
देलौं शरण निर्बलके हे दानी

दर्शन अपन दिअ हे अम्बे माता
नै सोन झूठक चाही नै चानी

धेलक चरण ‘मनु’ तोहर हे मैया
नै आब जगमे ककरो हम जानी ❑

(मात्रा क्रम : 2212-222-222)

गजल- 99

माँ शारदे वरदान दिअ
हमरो हृदयमे ज्ञान दिअ

हरि ली सभक अन्हार हम
एहन इजोतक दान दिअ

सुनि दोख हम कखनो अपन
दुख नै हुए ओ कान दिअ

गाबी अहींकेँ गुण सगर
सुर कन्ठ एहन तान दिअ

बुझि पुत्र ‘मनु’केँ माँ अपन
कनिको हृदयमे स्थान दिअ ❑

(बहरे रजज, मात्रा क्रम : 2212-2212)

गजल- 100

कनी हमरो बजा दिअ माँ
अपन दर्शन करा दिअ माँ

कते आशा लगोने छी
अपन चाकर बना दिअ माँ

जनम भरि बनि टुगर रहलौं
सिनेहक निर चटा दिअ माँ

जँ हम नेना अहाँकेँ छी
अलख मनमे जगा दिअ माँ

सुखेलै नोर जरि आँखिक
चरण 'मनु'केँ दखा दिअ माँ ❑

(बहरे हजज, मात्रा क्रम : 1222-1222)

गजल- 101

नै अहाँ केर बिसरी नाम हे भगवन
होइ कखनो अहाँ नै बाम हे भगवन

सुख कि भेटे दुखे जीवनक रस्तापर
संगमे रहथि सदिखन राम हे भगवन

हम बनेलौं सिया मंदिर अपन मनकेँ
आब कतए अहाँकेँ ठाम हे भगवन

आन नै आश कोनो बचल जीवनकेँ
अपन दर्शनकटा दिअ दाम हे भगवन

'मनु' अहाँकेँ करैए जोड़ि कल विनती
तोड़ि फेरसँ तँ अबियौ खाम हे भगवन ❑

(बहरे मुशाकिल, मात्रा कर्म : 2122-1222-1222)

❑ ❑ ❑

गजल नहि लिखतौं तँ हम करितौं की

गजल बिनु जिनगी अपन जीबितौं की

❑ ❑ ❑

Notes



जगदानन्द झा 'मनु'

लेखक परिचय :

नाम- जगदानन्द झा 'मनु'

पिता- स्वर्गीय राज कुमार झा

माता- श्रीमती मंजू देवी

जन्म तिथि आ स्थान- 13 नवम्बर; 1973, हरिपुर डीहटोल, मधुबनी ।

शिक्षा- बिजनेसमे स्नातक, दिल्ली विश्वविद्यालयसँ। इलेक्ट्रानिक्स आ कम्पयूटर हार्डवेयरमे डिप्लोमा ।

वृति- प्रोफेसनल नेटवर्कर आ बिजनेस लीडर

पैतृक गाम पता- ग्राम पोस्ट हरिपुर डीहटोल, जिला मधुबनी, बिहार

वर्तमान निवास- अशोका ग्रीनस, सेक्टर-1, ग्रेटर नोएडा (वेस्ट), जिला- गौतम बुद्ध नगर

मोबाइल/वाट्सअप न0- 91 92124 61006

ई मेल- jagdanandjha@gmail.com

साहित्यिक उपलब्धि :

(क) इसा सन 2010 सँ विदेह ई पत्रिका संगे संग विभिन्न, ब्लॉग आ प्रिंट पत्रिका सभमे गजल, गीत, कविता, बीहनि कथा आ कथा प्रकाशित भ रहल छनि। दिल्लीसँ प्रकाशित होए बला मैथिली पत्रिका, मिथिलांचल टुडेमे संपादकीय सहयोगक पदभार देखला। मैथिलीक चर्चित ब्लॉग, मैथिलीपुत्रकें निर्माण संगे संग संसालन आ संपादकीय कार्य देख रहल छथि।

(ख) प्रकाशित पोथी :

- तोहर कतेक रंग- बीहनि कथा संग्रह
- नढ़िया भुकैए हमर घराड़ीपर- बहरयुक्त गजल संग्रह
- चोनहा- बाल उपन्यास (विदेह मैथिली शिशु उत्सवमे प्रकाशित)

पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

मूल्य : ₹ 200/-

ISBN: 978-93-93135-18-6